डॉ रंजीत कुमार,
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कैब्स, डी आर डी ओ, बेंगलुरु

भारतीय भाषाओं में व्यावसायिक और कौशल शिक्षा का महत्व, चुनौतियां और संभावनाएं

सारांश- व्यावसायिक शिक्षा राष्ट्र और समाज में वांछित परिवर्तन लाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन होता है। व्यावसायिक शिक्षा व्यक्तिगत जीविकोपार्जन ,सामाजिक, और राष्ट्रीय प्रगति के लिए ही नहीं बल्कि संस्कृति और स्भ्यता के संवर्द्धन के लिए भी अनिवार्य है। हमारे देश में व्यावसायिक शिक्षा वैदिक से होता रहा है। उस काल में जातिगत व्यवसाय का प्रचलन था। धातुकार, चर्मकार, सोनार, बुनकर, रंगसाज इत्यादि। इन व्यावसाय का प्रशिक्षण भारतीय भाषा में होता था।

व्यावसायिक शिक्षा से हमें रोजगार पाने की दक्षता हासिल होती है और हमें व्यावसायिक कार्य करने में हूनर के साथ आत्मविश्वास प्राप्त होता है। इससे हम देश के विकास में सहभागी बनते हैं फलतः राष्ट्र आर्थिक उन्नति करता है इसलिए हमें देश को विकसित और आत्मनिर्भर बनाने के लिए युवाओं के लिए व्यावसायिक शिक्षा और तकनीकी कार्य कौशल संवर्द्धन परियोजनाओं का निष्पादन की अनिवार्य जरूरत बन गई है। व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के आभाव में लोकतांत्रिक देश का विकास संभव नहीं है। विकसित देशों की तुलना में हमारे देश में व्यावसायिक शिक्षा का दर लगभग 5 प्रतिशत है जबकि दक्षिण कोरिया में 95 प्रतिशत से अधिक है। जब मानव को तकनीकी कौशल और व्यावसायिक शिक्षा के द्वारा निष्णात किया जाता है तब वह मानव संसाधन बन जाता है। युवाओं को रोजगार तभी प्राप्त होगा, जब उसके हाथ में व्यावसायिक शिक्षा का कला, हूनर और दक्षता होगी । व्यावसायिक शिक्षा से हमारे देश के युवा को रोजगार और व्यवसाय प्राप्त होगी तो देश तरक्की करेगा। सरकारी स्तर पर इसके लिए प्रत्येक जिला में कम से कम पाँच व्यावसायिक शिक्षण पशिक्षण केंद्र स्थापित किया जाय जिसमें सुनार, धातुकार, चर्मकार, कुंभकार, बुनकर, रंगसाज इत्यादि जो लोहा, काष्ठ, चर्म, बांस, कपास के द्वारा अनेक प्रकार का व्यवसाय होता था। परंतु आधुनिक युग में कम्प्युटर ऑपरेटर , पलम्बर, फेब्रिकेसन, प्रिंटिंग, लेथमशीन, आटोमोबाइल, ऑटो रिपेयर, बस-ट्रक, मशीन रिपेयर, मोबाइल फोन रिपेयर,भवन पेंटिंग, टी वी और कम्प्युटर रिपेयर, वॉशिंग मशीन फ्रीज़ रिपेयर, डेयरी उत्पाद, कृषि उद्योग इत्यादि क्षेत्रों में आधुनिक उपयोगी प्रशिक्षण की व्यवस्था हो। उच्च व्यावसायिक शिक्षा और तकनीकी शिक्षा और प्रबंधन शिक्षण भारतीय भाषाओं में प्रशिक्षित करने हेतु राष्ट्रीय स्तर का मानक संस्थान स्थापित किया जाय, जहां हिन्दी और भारतीय भाषा प्रशिक्षण का माध्यम हो। जिसमें कम्प्युटर विज्ञान, रेडार प्रोद्यौगिकी, नैनो प्रोद्यौगिकी, वैमानिकी, टेक्सटाइल प्रोद्यौगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स प्रोद्यौगिकी, प्लास्टिक प्रोद्यौगिकी इत्यादि इसका मूल्यांकन शिक्षण संस्थान के अलावा इंडस्ट्री और कंपनी में किया जाय। तकनीकी कौशल को हिन्दी और भारतीय भाषाओं में प्रशिक्षण दिया जाय। हमारे देश में बहुत सारे भारतीय प्रोद्यौगिकी संस्थाओं और राष्ट्रीय कार्यस्थल पर कार्य कौशल और तकनीक का मूल्यांकन किया जाय। लोहा, काष्ठ, चर्म, बांस, जुट इत्यादि पर आधारित कुटीर उद्योग स्थापित करने हेतु प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किया किया जाय इसका समुचित प्रशिक्षण कि सुविधा वहाँ कि भाषाओं में देने की जरूरत है। ग्रामीण स्तर पर माध्यमिक विद्यालय में मानक और उपयोगी व्यावसायिक

शिक्षा देने हेतु योजना बनाई जाय। तकनीकी विश्वविद्यालय और अनुवाद विश्वविद्यालय की स्थापना करने की जरूरत है इसके लिए व्यावसायिक शिक्षा हेतु सरकारी स्तर पर अनेक सार्थक परियोजना लागु किया जा रहा है परंतु इंडस्ट्री और कंपनी की अपेक्षा के अनुसार उपयोगी कुशल प्रशिक्षित मानव संसाधन उपलब्ध नहीं हो पता है। देश भर में व्यावसायिक शिक्षा और कौशल संवर्द्धन हेतु अनेक संस्थाओं का निर्माण किया जा रहा है। उसके बावजूद व्यावसायिक दक्षता से सम्पन्न मानव संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाता है। इसका मूल कारण यह है कि भारतीय भाषाओं में प्रशिक्षण का आभाव रहा है। हमारे देश में कुशल, योग्य और अनुभवी व्यावसायिक कोर्से के प्रशिक्षक का आभाव रहा है। इसके साथ ही भारतीय भाषाओं में पाठ्य सामग्री का आभाव रहता है। अनुभवी और योग्य प्रशिक्षक व्यावसायिक शिक्षा संबंधी संदर्भ ग्रंथ और पाठ्य सामग्री लेखन के प्रति गहरी रुचि नहीं रहती है। इन्हें छात्रों की जरूरत के अनुसार प्रशिक्षण देने के दक्षता और क्षमता की कमी रहती है। अधिकांश महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाया जाता है अँग्रेजी माध्यम से शिक्षा से जो साथ कक्षा में अंग्रेजी हमारे देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। आजादी के 75 वर्ष बाद भी हमारा देश आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। इसका मूल कारण व्यावसायिक और स्वदेशी शिक्षा प्रणाली साथ ही भारतीय परिवेश के अनुकूल पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या का सदैव आभाव रहा है। फलतः हमारे देश बेरोजगार युवकों की संख्या बढ़ती रही और बेकारी की समस्या काफी भयानक और विकराल रूप ले चुकी है जो हमारे देश की विकास में सबसे बड़ी बाधा है। अँग्रेजी शासन के पहले हमारा देश सभी क्षेत्र में आत्मनिर्भर था इसका मूल कारण ग्रामीण परिवेश काफी खुशहाल था और सभी के पास रोजगार था। चर्म, काष्ठ, लौह, बांस के घरेलू समान का निर्माण कुटीर उद्योग के माध्यम से ऊटपादन होता था इसके अलावा जुट, पटसन. चीनी मिट्टी, सुती, रेशमी, ऊन वस्त्र , महिलाओं हेतु मिठाई, आचार, पापड़, कशीदाकारी इत्यादि से जुड़े हस्त काला कार्य और व्यवसाय होता था । हमारे देश में सभी के पास जीविकोपार्जन का साधन सुलभ था। वस्त्र और मसाला का व्यापार होता था। आम जन परंपरागत व्यवसाय और कुटीर उद्योग से जुड़े थे। चर्म, काष्ठ, लौह, ताम्र, बांस के घरेलू समान के निर्माण कला घर और समाज के अभिभावक, माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची से मातृ भाषा में होता था। इस प्रकार के कार्य व्यापार सम्पूर्ण देश में होता था। असम में बांस, पश्चिम बंगाल और बिहार में पटसन, राजस्थान में ऊन, महाराष्ट्र में सुती वस्त्र, गुजरात में नमक, कश्मीर में सिल्क और ऊनी वस्त्र का व्यवसाय होता था दक्षिण भारत में सिल्क वस्त्र, हथकरघा, नारियल तेल और नारियल का रस्सी, हाथी दाँत के समान, पत्थर के बने, हस्त चालित घरेलू चक्की, जाता (अनाज पीसने का उपकरण) , खरल मूसल, छोटा मंदिर, समान, मशाला, आयुर्वेदिक दवाइयाँ तैयार होता था। इसके अलावा सम्पूर्ण देश में हतकरघा से सुती कपड़ा तैयार होता था । प्राचीन भारत में सभी के पास व्यावहारिक एवं प्रयोजनमूलक, व्यावसायिक शिक्षा मिलता था । उस काल का समाज समृद्ध था। देश आत्मनिर्भर था। शिक्षा प्रत्येक समाज और प्रत्येक देश के मानव संसाधन को समृद्ध एवं विद्यावान बनाने के लिए अनिवार्य आवश्यकता है। यह व्यक्ति एवं समाज को आत्मनिर्भर बनाता है। इससे मनुष्य कौशल एवं विद्या से परिपूर्ण होता है। इस प्रकार के शिक्षा से देश की प्राकृतिक एवं मानव को पूर्णतया उपयोगी सिद्ध होता है। संसाधन से प्रयोजनमूलक, तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा से ही राष्ट्र उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है। इस भारती परिवेश एवं समाज की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही शिक्षा व्यवस्था को लागू किया जाना चाहिए। व्यावहारिक व्यावसायिक शिक्षा शिक्षा प्रणाली के अपनाने से युवावर्ग में आत्मबल और आत्मचिंतन की क्षमता पैदा होती है फलत: शिक्षा दैनिक एवं सामाजिक जीवन और राष्ट्रीय उन्नति मे काफी उपयोगी सिद्ध होगा। विदेशी शिक्षा विदेश के परिवेश एवं भूगोल के अनुसार बनाया जाता है इसलिए प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर विदेशी शिक्षा कभी भी लाभकारी एवं उपयोगी नहीं हो सकता है। व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव संस्कृति पर पड़ता है और संस्कृति का प्रभाव शिक्षा पर पड़ता है इसलिए विदेशी शिक्षा से विदेशी संस्कृति का प्रभाव हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था को पंगु बना दिया है। इसलिए व्यावहारिक एवं प्रयोजनमूलक व्यावसायिक शिक्षा के अभाव देश का विकास संभव नहीं हो सकता है।

कुंज्जी शब्द - व्यावसायिक शिक्षा, अधिगम, प्रयोजनमूलक, भाषिक कौशल, अनुवाद, यूनिकोड, गुरुकुल प्रणाली

प्रस्तावना हमारे देश में प्राचीन काल का व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली बहुत ही वैज्ञानिक, व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी थी । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक शिक्षा का कौशल और तकनीक समाहित था जिसका माध्यम भारतीय भाषा था यानि संस्कृत, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, उड़िया इत्यादि व्यावसायिक शिक्षा का ध्येय ज्ञान से ज्यादा महत्त्व विद्या और कौशल तकनीक पर केंद्रीत था। इसलिए प्राचीन समय में व्यावसायिक शिक्षा का लक्ष्य जीवन को सरल एवं सुगम बनाना तथा समाज निर्माण में

सहभागी बनना होता था। प्राचीन शिक्षा में मानव के व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान रखा जाता था। दैनिक जीवन और सामाजिक जीवन का सभी कार्य का कौशल प्राप्त होता था। फलत: व्यावसायिक शिक्षा जीवन से जुड़ी आवश्यकता थी जिसके माध्यम व्यक्तिअपने जीवन में सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्व निभाने में सक्षम था जिससे सभी छात्र राष्ट्र निर्माण में सहभागी बनते थे। परंतु आज विडम्बना यह है कि एम.ए, एम.एस-सी, एम.कॉम, अभियांत्रिकी, एम.बी.ए उपाधि प्राप्त करने के बाद भी आर्थिक आत्मनिर्भर और समाज हितैषी नहीं बन पाता है। इस प्रकार हम पाते हैं। आधुनिक शिक्षा युवावर्ग के समग्र व्यक्तित्व के विकास में सक्षम नहीं हो पाता है। केवल उपाधि प्राप्त करने का जरिया बन गया है। इस उपाधि से युवावर्ग सरकारी रोजगार पान की लालसा बनी रहती है। प्राथमिक विद्यालय, उच्च विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर मानक एवं समाजोपयोगी पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या का अभाव रहता है। भारतीय परिवेश के अनुकूल शिक्षा व्यवस्था का संचालन नही हो पाता है। फलत: हमारे देश में प्रत्येक वर्ष हजारों इंजनीनियर, प्रबंधक की उपाधि प्राप्त युवावर्ग रोजगार पाने के लिए संघर्ष करते हैं। आधुनिक और उपयोगी तकनीकी कौशल सीखे बिना ही उपाधि प्राप्त कर लेते है बाद कंपनी की अपेक्षा को पूरी नहीं कर पाते फलतः नौकरी से छटनी कर दी जाती है हजारों की संख्या में बेरोजगार युवा इंजीनियर और प्रबंधकों में कंपनी और इंडस्ट्री हेतु आवश्यक कौशल का अभाव रहता है। 1960 में बनी पाठ्यक्रम आज भी पढ़ाये जाते हैं फलत: शिक्षा और इंडस्ट्री की आवश्यकता के बीच बहुत बड़ा खाई होता है। इसलिए हजारों इंजीनियरों एवं प्रबंधकों में से मात्र 10 प्रतिशत ही रोजगार पाने की दक्षता एवं क्षमता रखता बाकि बेरोजगार की फौज बनकर रह जाते हैं। इस प्रकार के छात्रों एवं युवावर्ग का कोई दोष नहीं है बल्कि हजारों की की संख्या खुले इंजीनियरिंग महाविद्यालय और प्रबंधन संस्थान जो मानव संसाधन उत्पादन करता है। वहाँ मानक और कंपनी में उपयोगी और समसामयिक तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा नहीं मिलता है। इंडस्ट्री के अवश्यकता के अनुसार भारतीय भाषा में व्यावहारिक और तकनीकी कौशल युक्त शिक्षा नहीं दी जाती है। इन संस्थाओं से प्राप्त उपाधि पानेवाले छात्रों का भविष्य अंधकारमय बना रहता है। तकनीकी कौशल और गुणवत्ताविहीन डिग्रीधारी बेकारी की समस्या से जूझते हैं। इन संस्थाओं के युवा छात्र पाठ्य क्रम को रट कर पास हो जाते है केवल कुछ नीजि और गैरसरकारी संस्थाओं को छोड़कर देखा जाय तो हम पाते हैं कि ये सभी संस्थाएं छात्रों को उपाधि वितरित करते हैं। महात्मा गांधी ने कहा था कि स्नातक उपाधि प्राप्त छात्र अवश्य आत्मनिर्भर होना चाहिए। शिक्षक का दायित्व है कि स्नातक छात्र पूर्णत: आत्मनिर्भर एवं समाजोपयोगी कार्य निष्पादन में दक्ष एवं सक्षम बनाया जाय। विड़बना की बात यह है स्नातक एवं परास्नातक छात्र को कोई भी कौशल एवं व्यावहारिक विद्या प्राप्त नहीं होता है फलत: वे बेकारी का जीवन जीने के लिए अभिशप्त हो जाते हैं।

व्यावसायिक शिक्षा का महत्व - मानव जीवन में व्यावसायिक शिक्षा सूर्य के भांति जीवन को आलोकित करता है। भारतीय भाषाओं में दी गई व्यावसायिक शिक्षा से युवाओं तकनीकी कौशल एवं बौद्धिक चेतना का विस्तार होता है। अच्छी व्यावसायिक शिक्षा के अभाव में देश की प्रगति में सहभागिता नहीं दे पाते हैं। फलत: देश विकास के दौर में पीछे रह जाता है। योग्य, कुशल एवं अनुभवी नागरिक ही देश को महानता के शिखर पर पहूँचाता है। मानव संसाधन को वैज्ञानिक एवं तकनीकी कौशल से युक्त करने से ही समृद्ध देश का निर्माण हो सकता है। व्यावसायिक शिक्षा और कौशल संवर्द्धन से राष्ट्र समृद्ध और आत्मनिर्भर होता है। इसी के द्वारा समृद्ध भारत निर्माण की संकल्पना साकार हो सकता है।

व्यावसायिक शिक्षा की चुनौतियाँ - हमारे देश में व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के प्रति गहरी चिंतन एवं मनन की सख्त आवश्यकता है क्योंकि हमारे देश में मात्र 6 प्रतिशत युवाओं को व्यावसायिक शिक्षा उपलब्ध हो पाता है। उसमे भी अधिकांश संस्थाओं में अँग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाती है। हालांकि नई शिक्षा प्रणाली में कक्षा -6 से ही कौशल विकास पर बल दिया गया है परंतु देश भर रोजगार और जीविकोपार्जन हेतु कौशल सिखाने वाले प्रशिक्षक का काफी अभाव है। भारतीय भाषाओं में मानक और आधुनिक सूचना प्रोद्यौगिकी से युक्त प्रशिक्षक प्रशिक्षण संस्थान और आधुनिक कंपनी के अनुकूल व्यावसायिक पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या का काफी कमी है। देश में मानक एवं व्यावसायिक और प्रयोजनमूलक शिक्षा को अनिवार्य नहीं बनाया गया है जबकि विकसित देशों में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा अनिवार्य है। भारत को विश्व की शक्तिशाली एवं विकसित बनने की सबसे बड़ी बाधा व्यावसायिक शिक्षा का कमी है साथ ही जो अंग्रेजी शिक्षा दी जा रही वह भारतीय भौगोलिक परिवेश, पर्यावरण और भारतीय संस्कृति के अनुकूल नहीं है। कौशल और विद्या मूल्याकन के स्थान पर अंक आधारित परीक्षा प्रणाली के कारण छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास और व्यावहारिक ज्ञान का मूल्यांकन नहीं हो पाता है।

भारत में व्यावसायिक शिक्षा और कौशल संवर्द्धन परियोजना व्यवस्था बहुत ही जटिल समस्याओं से उलझी हुई है। व्यावसायिक शिक्षा व्यवस्था आजादी के बाद से अनेक आर्थिक, राजनीतिक, संवैधानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, क्षेत्रीय, प्रबंधकीय और भाषिक समस्याओं के दलदल में फंसा हुआ। 200 वर्ष की गुलामी ने भारतीय शिक्षा और ज्ञान कौशल परंपरा का मौलिक स्वरूप को नष्ट एवं भ्रष्ट कर दिया गया है। मानक एवं प्रगतिशील व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के आभाव में लोकतांत्रिक देश का विकास संभव नहीं है।

व्यावसायिक आर कौशल शिक्षा प्रणाली की समस्याएं एवं चुनौतियां

पाठयक्रम और पाठ्यचर्या की समस्या – हमारे देश में प्राथमिक, माध्यमिक स्तर के व्यावसायिक शिक्षा का पाठ्यक्रम और पाठ्यचार्य बच्चों और युवाओं के भौगोलिक परिवेश और संसाधनो के अनुकूल नहीं बनाया गया है। बच्चों और युवा की भाषिक क्षमता, मनोविज्ञान एवं भावना और रोजगार को ध्यान में रखकर शिक्षा नहीं दी जा रही है। अनेक विषयों के ज्ञान को ठुसा जा रहा है। उसके दैनिक ज्ञान को जीवन एवं समाज से जोड़कर पढ़ाया नहीं जाता है। फलत: तकनीकी शिक्षा अपने उद्देश्य को पाने विफल हो जाता है जिसका मूल कारण आधुनिक व्यावहारिक और व्यावसायिक शिक्षा की संकल्पना का अभाव होता है। आजकल सभी बच्चों के माता-पिता अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं जिससे बच्चों का वास्तविक व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता है। हिन्दी संस्कृति का बच्चा अंग्रेजी माध्यम में जाकर मौलिक सोच और चिंतन से दूर हो जाता है रटंत शिक्षा केवल उपाधि देनेवाला शिक्षा होता है इस शिक्षा से बालक समाज और देश की संकल्पना को समझ नहीं पाता और देश के विकास में सहभागी नहीं बन पाता है इसके साथ ही प्राथमिक कक्षा का पाठ्यक्रम शहर एवं गांव का एक समान कैसे हो सकता है दोनो जगहों की भौगोलिक विविधता और संसाधनों भिन्न्ता होती है। शिक्षा परिवेश एवं प्राकृतिक पर्यावरण अनुसार नहीं मिल पाता है। गांव में खेत खलिहान, बागान, फसल, बड़े-बड़े वृक्ष, लताएं, बेल, वनस्पति, नदी, सरोवर, तालाब, पहाड़ इत्यादि होते है जो उस क्षेत्र का प्राकृतिक संसाधन होता है जिसका उपयोग एवं महत्व से परिचित होना जरूरी होता परंतु इसके लाभ से परिचित करने के लिए कोई अलग पाठ्यक्रम या पाठ्यचर्या नहीं बनाया जाता है । शिक्षा निदेशालय राज्य के राजधानी में बैठ कर व्यावसायिक पाठ्यक्रम बनाते हैं जो बच्चों एवं युवा के भविष्य के अनुकूल नहीं होता है। कभी –कभी शिक्षा के क्षेत्र शिक्षा विशेषज्ञ, अनुभवी शिक्षक, आचार्य, प्रचार्य, तकनीकी विशेषज्ञ, साहित्यकार, समाजसेवी, महापुरुष के विचार एवं दर्शन के समन्वित प्रयास से नहीं बनाया जाता है। उपरोक्त विशिष्ठगण के विचारों एवं सुझावों के अभाव में शिक्षा का स्तर मानक नहीं बन सका है और न ही समाजोपयोगी हो पाया है। राजधानी, नगर, शहर एवं ग्राम के लिए एक समान पाठ्यक्रम निर्धारित कर दी जाती है उस शिक्षा का व्यावारिक पक्ष अधुरा रह जाता गांव का बालक गांव के प्राकृतिक संसाधन के महत्व से वंचित रह जाता है।

व्यावहारिक प्रशिक्षण की उपेक्षा – सभी छात्रों के लिए विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर व्यवहारिक प्रशिक्षण और व्यावसायिक पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या शामिल नही किया गया है। यहाँ सैद्धांतिक शिक्षा पर बल दिया जाता है। व्यावसायिक शिक्षा के बिना जीवनोपयोगी शिक्षा का कोई महत्व नहीं है । संस्कृति शिक्षा के अभाव में युवाओं को समाज में नारी, बालक, बालिका, गुरुजन, शिक्षिका अध्यापक, मित्र, अग्रज, माता-पिता, अभिभावक के साथ कैस वर्ताव करें और भारतीयता का गौरव बोध के महत्व को सिखाया नहीं जा रहा है फलत: बालक किशोरावस्था में हिंसक, दुराचारी, अपराधी प्रवृति का अनुसरण करने लगते हैं जो समाज को गंदा करता है और बालक का भविष्य अंधकारमय हो जाता है। प्राचीन काल में नैतिक मूल्य नैतिक चेतना से जागृत किया जाता था। अँग्रेजी माध्यम के कान्वेंट और पब्लिक स्कूल के बच्चों को भारतीय संस्कृति का ज्ञान नहीं दिया जाता है जिससे देशभक्ति का प्रेम कायम नहीं रह पाता है।

भारत में व्यावसायिक शिक्षा और कौशल संवर्द्धन परियोजना व्यवस्था बहुत ही जटिल समस्याओं से उलझी हुई है। व्यावसायिक शिक्षा व्यवस्था आजादी के बाद से अनेक आर्थिक, राजनीतिक, संवैधानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, क्षेत्रीय, प्रबंधकीय और भाषिक समस्याओं के दलदल में फंसा हुआ। 200 वर्ष की गुलामी ने भारतीय शिक्षा और ज्ञान कौशल परंपरा का मौलिक स्वरूप को नष्ट एवं भ्रष्ट कर दिया गया है।

उच्चशिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा की समस्या – हमारे देश में युवाओं को उच्च शिक्षा के क्षेत्र भाषिक समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। व्यावसायिक शिक्षण संस्थानो से उच्च शिक्षा अर्जित करने के बाद भी बेरोजगार हैं। इसके अलावा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक शिक्षा एवं साहित्य का पाठ्यक्रम का आभाव है। मानव जीवन के सामाजिक परिप्रेक्ष्य हेतु समसामयिक एवं भविष्य की आवश्यकता की पूर्ति के लिए व्यावहारिक व्यावसायिक शिक्षा और कौशल संवर्धन की जरूरत है गत 75 वर्षों से अंग्रेजी शिक्षा पद्धति से देश के सतत विकास में कोई खास प्रगति परिलक्षित नहीं हुई है। मानव संसाधन के चतुर्मूखी विकास कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं पड़ रहा है। अँग्रेजी शिक्षा पद्धति भारतीय युवाओं को दिग्भ्रमित कर रहा है संस्कृति व्यक्तित्व विकास और रोजगारोनमुखी कौशल और तकनीक के उन्नयन में कोई योगदान सिद्ध नहीं हुआ है। व्यावसायिक शिक्षा में बालकों को हस्तकला, काष्ठ कला, कम्प्युटर हार्डवेयर प्रकृति एवं पर्यावरण एवं मातृभाषा का कौशल सिखानेजरूरत होती है। इससे भी महत्वपूर्ण मधायमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में तकनीकी कौशल विषय के अलावा भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति प्रकृति एवं पर्यावरण इत्यादि शामिल किया जाय साथ ही इसके उपादेयता को बताना जरूरी है।

व्यावसायिक शिक्षा की चुनौतियों का समाधान

देश, काल, संस्कृति एवं परिवेशगत संसाधन के अनुकूल शिक्षा नीति का निर्माण- शिक्षा नीति के निर्माण में स्वैच्छिक सुझाव के साथ साथ विद्यावान एवं प्रोद्योगिकी शिक्षाविद् के दल के द्वारा शिक्षानीति का निर्माण किया जाय जिसमें भारतीय भाषाओं में शिक्षा का व्यवस्था हो। शिक्षकों , प्रशिक्षकों के कमी को दूर किया जाय। जापानी कोरियाई जर्मन इत्यादि देशों की व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली को देशी परिवेश में अनुकूलित कर लागू किया जाय। भारतीय भाषाओं में व्यावसायिक शिक्षा सुलभ किया जाय। व्यावसायिक शिक्षा को आधुनिक और अद्यतन बनाया जाय। तकनीकी शिक्षा प्राप्त युवाओं को रोजगार सुनिश्चित करने की जरूरत है। गाँव के उत्कृष्ट और अनुभवी चर्मकार, काष्ठकार, धातुकार, रंगसाज, शिल्पी, सोनार, हलवाई, को प्रशिक्षण का अवसर प्रदान करने से व्यावसायिक शिक्षकों की कमी को दूर किया जा सकता है। हिन्दी भाषा में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए पाठ्य सामाग्री और प्रशिक्षण सामग्री तैयार करने हेतु विशेषज्ञों का पैनल बनाकर ज़िम्मेदारी दिया जाय। व्यावसायिक हिन्दी और प्रयोजनमूलक हिन्दी सीखने से भी रोजगार की अपार अवसर हैं।

व्यावसायिक शिक्षा और कौशल अनुससंधान केंद्र की स्थापना

देश भर में प्रत्येक जिला स्तर दो या तीन व्यावसायिक शिक्षण संस्थान की स्थापना की जाए जिसमे रोजगार और छात्रों की रुचि के अनुकूल तथा औद्योगिक जगत की मांग के अनुसार ट्रेड और ब्रांच की सुविधा हो नामांकन के नामांकन ओरिएंटसन कराया जाए। कोर्से के अनुसार मानक पाठ्यक्रम बनाकर योजनबद्ध तरीके लागु किया जाए। इन सभी कार्यों में नवीनता हेतु प्रत्येक राज्य में व्यावसायिक शिक्षा और कौशल अनुससंधान केंद्र की स्थापना करने की जरूरत है।

व्यावसायिक शिक्षा और कौशल हेतु हिन्दी और भारतीय भाषाओं में प्रकाशित संदर्भ ग्रंथ और पाठ्यपुस्तक का लेखन और वितरण सुनिश्चित कर व्यावसायिक शिक्षा और कौशल मानक बनाया जाए। इसके लिए प्रत्येक जिला स्तर पर पुस्तकालय एवं सूचना केंद्र और अनूदित साहित्य का ग्रंथालय और व्यावसायिक शिक्षा और कौशल हेतु प्रयोगिक कक्षा हेतु आवश्यक इलैक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण, यंत्र, उपस्कर, ओसोलोमेटर, बेरोमीटर, स्लाइड कैलीपेर्स, कार्पेंटर के औज़ार, सोनार के ओजार, लेथ मशीन, डिजिटल इन्स्ट्रुमेंट की व्यवस्था की जाए। इस प्रकार के आवश्यक उपकरण से मानक प्रशिक्षण संभव हो पाएगा। हिन्दी और भारतीय भाषाओं में प्रकाशित मानक कार्य प्रविधि साहित्य, नियमावली , उपकरण विवरणिका इत्यादि का प्रबंध होना चाहिए।

व्यावसायिक शिक्षा और कौशल हेतु मानक भवन , शौचालय, छात्रावास, कंप्यूटर, इंटरनेट, औडियो विडियो रूम, रीडिंग रूम, वर्कशॉप, सभागार, मनोवैज्ञानिक परामर्श प्लेसमेंट सेल का प्रबंध होना चाहिए। वाय फ़ाय की सुविधा सहित लैपटाप, कैमरा और अन्य डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण इत्यादि की सुविधा रहने से व्यावसायिक शिक्षा और कौशल को नई दिशा मिलेगी। कुशल और अनुभवी प्रशिक्षक की नियुक्ति हो और राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षकों के लिए भी अद्यतन और रेफ्रेशर कोर्से आयोजित किया

जाए और प्रत्येक वर्ष एक माह का ओरिएंटेशन कोर्से हेतु नामित किया जाए साथ ही मानक प्रशिक्षण मूल्यांकन हो। असफल प्रतिभागी को दूसरे वर्ष स्वयं के प्रशिक्षण शुल्क से पास करने का प्रावधान होना चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा और कौशल प्रशिक्षक का राष्ट्रिय स्तर का पैनल सूची बनाया जाए और उसे वैबसाइट पर अपलोड किया जाए।

व्यावसायिक शिक्षा और कौशल नीति - व्यावसायिक शिक्षा और कौशल परियोजना को प्रभावी अनुपालन हेतु व्यावसायिक शिक्षा और कौशल नीति का निर्माण होना चाहिए जिसके जानकारी सभी शिक्षक और छात्रों को उपलब्ध कराया जाए। रोजगार नीति के साथ वेतन भत्ता और सामाजिक सुरक्षा का प्रबंध किया जाए । टाटा, बिरला, अदानी, बजाज, टेकमहेन्द्रा, सुज़ुकी, होंडा, टाटा मोटर्स , इत्यादि कंपनियों में भी प्रशिक्षण देकर वहीं रोजगार सुनिश्चित किया जाए। श्रमिक के आर्थिक और मानसिक शोषण को रोकने हेतु कारगर नियम बनाकर प्रभावी तरीके से लागु किया जाए। प्रत्येक श्रमिक और कार्मिकों का जीवन बीमा और दुर्घटना बीमा की व्यवस्था होना चाहिए। श्रम क़ानून में बदलाव किया जाए।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानव जीवन में व्यावसायिक शिक्षा सूर्य के भांति जीवन को आलोकित करता है। व्यावसायिक शिक्षा तकनीकी कौशल एवं बौद्धिक चेतना से भर देता है। अच्छी व्यावसायिक शिक्षा एवं व्यावहारिक शिक्षा के अभाव में देश की प्रगति में सहभागिता नहीं दे पाते हैं। फलत: देश विकास के दौर में पीछे रह जाता है। इसलिए योग्य, कुशल एवं अनुभवी नागरिक ही देश को महानता के शिखर पर पहूँचाता है। मानव संसाधन को वैज्ञानिक एवं तकनीकी कौशल से युक्त करने से ही समृद्ध देश का निर्माण हो सकता है। व्यावसायिक शिक्षा और कौशल संवर्द्धन से राष्ट्र समृद्ध और आत्मनिर्भर होता है। इसी के द्वारा समृद्ध भारत निर्माण की संकल्पना साकार हो सकता है। हमारे देश में व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के प्रति गहरी चिंतन एवं मनन की सख्त आवश्यकता है। नई शिक्षा प्रणाली में भी कौशल पर बल दिया गया है परंतु देश भर रोजगार हेतु जीविकोपार्जन हेतु कौशल सिखाने वाले प्रशिक्षक का अभाव को दूर किया जाए है। भारतीय भाषाओं में मानक प्रशिक्षक प्रशिक्षण संस्थान का काफी कमी है इसलिए प्रेत्येक जिला में 2-3 प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किया जाए। युवाओं के उज्जवल भविष्य के लिए देश में मानक एवं प्रयोजनमूलक, व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा देने की अनिवार्य आवश्यकता है। भारत को विश्व की शक्तिशाली एवं विकसित बनने की सबसे बड़ी बाधा व्यावसायिक शिक्षा का कमी है साथ ही जो अंग्रेजी शिक्षा दी जा रही वह भारतीय भौगोलिक परिवेश, पर्यावरण और भारतीय संस्कृति के अनुकूल नहीं है। अंक आधारित परीक्षा प्रणाली के कारण छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास और व्यावहारिक ज्ञान का मूल्यांकन नहीं हो पाता है। इसलिए व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली में काफी प्रभावी परिवर्तन कि आवश्यकता है जिसे शिक्षा मंत्रालय के द्वारा नियोजित तरीके से करना होगा।

संदर्भिकाएं

1. यादव, आर.एस (जुलाई 2020). गुरु से बडा न कोय. हिंदी प्रचार वाणी, बेंगलूरु : कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति . पृष्ठ संख्या – 22
2. खान, पी.आर, (अगस्त 2017). भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का महत्व. वर्तमान में भारतीय सांस्कृतिक वैभव चुनौतियां व सुझाव: सिंधी महाविद्यालय,पृष्ठ सं-77
3. दिव्यकृति, विकास (2016) निबंध दृष्टि.दिल्ली: दृष्टि पब्लिकेशन. पृष्ठ सं-10.71
4. कुमार, प्रदीप (जून 2019),श्री सर्वपलली राधाकृष्णन और विश्व दर्शन. अक्षर वार्ता मासिक , उज्जैन: अक्षरवार्ता पब्लिकेशन. पृष्ठ सं – 8
5. शर्मा, एच एवं पावा, एस (2005). भारतीय संस्कृति के आधार. जयपुर:मलिक एंड मलिक कंपनी , पृष्ट संख्या 161
6. दोषी, एल.एल एवं जैन, पी.सी (2005) समाज शास्त्र. दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस. पृष्ठ सं-229
7. पांडे, जी.सी (2002) वैदिक संस्कृति. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाश, पृष्ठ सं-आमुख
8. सिंह, पी.(2015). भारतीय कला एवं संस्कृति की विकास यात्रा,दिल्ली : ज्योत्स्ना प्रकाशन. पृष्ठ सं- 49
9. पांडे, जी.सी (2002) वैदिक संस्कृति. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाश, पृष्ठ सं-428- .429
10. शर्मा, एच एवं पावा, एस (2005). भारतीय संस्कृति के आधार. जयपुर:मलिक एंड मलिक कंपनी , पृष्ट संख्या- 448
11. दुबे, एस (2000). परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति. दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.

12. दुबे, एस. (1994). शिक्षा, समाज और भविष्य. दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन,
13. शर्मा, आर. (1999). भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश. नई – दिल्ली: किताब घर,
14. शर्मा, आर. (1995). इतिहास दर्शन. नई-दिल्ली : वाणी प्रकाशन,
15. बसू, रूमकी, (2002). संयुक्त राष्ट्र: नोयडा: मयूर पेपर वैक्स.
16. दिनकर, आर.एस (2000). र्भारतीय संस्कृति के चार अध्याय . इलाहाबाद : लोकभारतीय प्रकाशन